प्रायोजनिक हिन्दी की दिशाएँ

हमारे दैनिक बोलचाल की भाषा प्रशासन, व्यवसाय, संचार, शिक्षा, तकनीकी आदि अनेक क्षेत्रों में असमर्थ नजर आती है। काव्यभाषा भी इन दिशाओं में कारगर नहीं होती। ऐसे में इन दिशाओं में प्रयुक्त शब्दावली, वाक्यसंरचना और भाषिक क्षमता के साथ प्रयोजनमूलक भाषा सक्रिय होती है। इसमें सामाजिक व्यवहार और जीवनोपयोग की तमाम दिशाएँ और सम्भावनाएँ होती हैं। वह भाषा, जिसका व्यापक व्यवहार मनुष्य समाज के विशाल फलक पर हो–प्रयोजनमूलक भाषा है। यह पूरी तरह समाजसापेक्ष और व्यवहारसापेक्ष भाषा है। स्वभावतः प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी-प्रयुक्ति की उन सारी दिशाओं से है, जहाँ दैनिक बोलचाल की हिन्दी और साहित्यिक अभिव्यक्ति की हिन्दी लाचार हो जाती है और नए-नए प्रायोजनिक सन्दर्भों में भाषा नई व्यावहारिक मंजिलें तय करती है। प्रयोग अथवा व्यवहार-क्षेत्र की विविधताओं के अनुसार यह भाषा अनेक रूपों में उपस्थित होती है। वैसे ही, जैसे मनुष्य अपने सामाजिक व्यवहार में एक साथ कई भूमिकाएँ निभाता है। एक ही व्यक्ति अधिकारी, पुत्र, पति, पिता, भाई जैसे कई रूपों में अलग-अलग सामाजिक आचरण करता है। उसका भाषिक व्यवहार भी इन सारी भूमिकाओं में एक जैसा नहीं होता। इसी तरह भाषा भी प्रयुक्ति की दृष्टि से बहुरूपी होती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी ने प्रयुक्ति की विविधता की दृष्टि से अपनी बहुआयामी क्षमता लगातार प्रदर्शित की है। इसी कारण विशिष्ट प्रयोजनों में प्रयुक्त होने वाली यह भाषा वाचिक और लिखित दोनों स्तरों पर अपनी विशिष्ट पहचान रेखांकित करती है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के सारे प्रतिरूप वस्तुतः प्रयुक्ति-भेद के कारण ही विकसित हुए हैं। कार्यालय, चिकित्सा, पत्रकारिता, फिल्म, न्यायालय आदि की हिन्दी में उपलब्ध अंतर प्रयुक्ति के कारण ही है। बैंकों में लोग उस भाषा का उपयोग नहीं करते, जो भाषा अभियांत्रिकी के क्षेत्र में व्यवहृत होती है। आकाशवाणी की हिन्दी और कचहरी की हिन्दी एक ही नहीं है। स्पष्ट है कि अलग-अलग प्रयुक्तियों में प्रयोजनमूलक भाषा विशिष्ट शब्दावली और संरचना के अनुरूप सजती है। प्रयुक्ति के सभी प्रभेदों में शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग सुनिश्चित रहते हैं। इसी कारण शब्द प्रयुक्तियों के अनुसार अलग-अलग अर्थ सूचित करते हैं। द्रव्य माँग, परिपत्र, प्रपत्र, ज्ञापन आदि असंख्य शब्दों का प्रयोग और अर्थ भिन्न-भिन्न प्रयुक्तियों में सुनिश्चित हैं। यह प्रयोजनमूलक हिन्दी की वैविध्यपूर्ण

7. इतर प्रयोजनों की हिन्दी :

भाषा प्रयुक्ति की सर्वाधिक व्यावहारिक दिशाओं के साथ ही साथ प्रायोजनिक हिन्दी का व्यवहार कई अन्य प्रयोजनों में भी लक्षित होता है। खेल, राजनीति, समाजसेवा, धर्म आदि ऐसे इतर प्रयोजन हैं, जहां हिन्दी ने अपनी प्रयोजनशीलता स्थापित की है। क्रिकेट, फुटबॉल, हाकी, टेनिस, एशियाड और ओलंपिक के बहाने खेलकूद की भाषिक प्रयुक्तियां हिन्दी में विकसित हुई हैं। गुगली, गोल, बल्ला, क्षेत्ररक्षण, लव, सेट, लम्बी कूद, हथगोला, विकेट जैसे शब्द विभिन्न खेलों के बहाने उछल कर हिन्दी में समाविष्ट हुए हैं। इसी तरह राजनीति, समाज सेवा, धर्म आदि की भी अपनी शब्दावलियां हैं। हिन्दी ने इन सभी प्रयुक्ति क्षेत्रों में अपनी क्षमता का परिचय दिया और इन सबके प्रयोजनों की सिद्धि की है।

प्रायोजनिक हिन्दी की इन विविध दिशाओं की परिक्रमा से संकेत मिलता है कि हिन्दी की अभिव्यक्ति एवं प्रयुक्ति का संसार असीमित है। तभी व्यापारी, अधिकारी, अभिनेता, खिलाड़ी, राजनेता, प्राध्यापक, न्यायाधीश, सम्पादक सभी अपनी-अपनी हिन्दी बोलते हैं। इस विलक्षण विविधता के लिए हिन्दी ने अपनी भाषिक संरचना को बेहद लोचदार बनाया है और अनगिनत स्रोतों से आगत शब्दों को आत्मसात् करने की शक्ति को विकसित किया है। भारत की सामासिक संस्कृति की प्रकृति के अनुरूप हिन्दी ने प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियों का सामासिक अनुकूलन किया है। नव्यतम प्रयुक्तियों के इसी प्रायोजनिक फलक पर हिन्दी विश्वमंच पर स्थापित हो रही है।

¤